कुषाण कालीन ब्राह्मीलिपि की विशेषता

Discuss the main feature of Brahmi script of kushan period.

प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व के अन्तिम चरण में भारतीय भू-भाग पर अपना अधिकार स्थापित किया और धीरे-धीरे मध्य भारत तक फैल गए। इस घटना से पूर्व उत्तरी पश्चिमी भारत एवं निकटवर्ती प्रांतों पर हिन्दयवन शासकों ने शासन किया, जिनकी लिपि यूनानी थी। हिन्द यवनशासकों ने अपने सिक्कों पर यूनानी एवं खरोष्ठी भाषा का प्रयोग किया। कालान्तर में कुषाण शासकों ने प्राचीन भारतीय ब्राह्मी लिपि को अंगीकार किया यद्यपि वे खरोष्ठी का भी प्रयोग करते रहे कुषाण कालिन सिक्कों पर यूनानी एवं खरोष्ठी का संयुक्त प्रयोग किया गया है। ऐसा स्वाभाविक प्रतित होता है कि तत्कालिन ब्राह्मी लिपि पर यूनानी प्रभाव पड़ा है। इसके साथ ही सबसे बड़ा परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है कि अभी तक लिपी की भाषा प्राकृत थी किन्तु इस समय संस्कृत का प्रादुर्भाव हुआ और भाषा के लिए संस्कृत का प्रयोग प्रारम्भ हो गया। इस प्रकार यूनानी एवं संस्कृत के प्रभाव के कारण ब्राह्मी में परिवर्तन हुए। इस काल की ब्राह्मी लिपि में दृष्टिगोचर होती है।

1. अशोक कालीन ब्राह्मी अक्षरों के अपेक्षा कुषाण ब्राह्मी के अक्षर चपटे और चौड़े होने लगे।
2. अक्षरों की बनावट एवं लिखने की कला को देखने से विदित होता है कि कलम के कट तिरछी बनाई जाती थी। जिससे अक्षरों में उतार चढ़ाव दिखाई देता है।
3. अशोक युगीन ब्राह्मी के उन अक्षरों के अपेक्षा उसमें एक नया मराठी अक्षर का प्रयोग किया गया है। यह अक्षर सर्वप्रथम साँची एवं मथुरा लेखों से प्राप्त होता है। ब्यूलर महोदय इस अक्षर को ब्राह्मी 'द' से विकसित मानते हैं।
4. इस युग में संयुक्त अक्षरों का प्रयोग अधिक किया जाने लगा। ऐसा प्रतित होता है कि अशोक कालीन संयुक्त अक्षर की परिपाटी एवं नियम का पालन पूर्णतया नहीं किया जाता था। इस युग की अभिलेख

Scanned with CamScanner

भाषा में संस्कृत के प्रभाव के कारण दीर्घ स्वर का प्रभाव बढ़ने लगा। स्वरों में दीर्घ ऊ तथा ए का विकास हुआ।

इस प्रकार कुछ विद्वानों का विचार है कि 'इ' तीन बिन्दुओं में एक और बिन्दु जोड़कर ई का विकास किया गया। डा० राजबली पाण्डेय का विचार है कि जिन अभिलेखों में 'ई' का प्रयोग किया गया है उन्हें पढ़ा जाना कठिन है क्योंकि अशोक काल में इ के लिए जहाँ चार बिन्दु का प्रयोग को विसर्ग बताया गया है।

6. संस्कृत में समान अनुस्वार का अधिक प्रयोग किया जाने लगा। अनुस्वार के लिए अक्षरों पर एक बिन्दु लगाया जाता था।

7. विसर्ग का भी प्रयोग होने लगा था विसर्ग के लिए अक्षर के बगल में दो बिंदु (:) का प्रयोग किया गया है।

8. अ की बनावट में स्पष्ट परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है इस युग में आधुनिक नागरी लिपि के समान अथवा उससे मिलते जुलते अ अक्षर बनने लगे थे।

9. उ की मात्रा अक्षर के बाद पर बायीं ओर घुमाकर बनने लगी।

10. आ की मात्रा का प्रयोग अक्षर के शीर्ष से कुछ नीचे किया नीचे किया जाने लगा।

11. घ के शीर्ष एवं पाद की सरल रेखा में परिवर्तित हो गयी।

12. रा का आकार अंग्रेजी के ना के समान बनने लगा।

13. र के लिए अक्षर के नीचे बायीं ओर एक तिरछी रेखा बनाई जाने लगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अशोक युग के उपरांत कुषाण युग में ब्राह्मी लिपि संस्कृत के प्रभाव के कारण लेखन शैली में कुछ परिवर्तन हुए उसका कारण लेखन की कला पर निर्भर करता है डा० ब्यूलर महोदय का कथन है कि अक्षरों का रेखांकन ने किसी ऐसी लिपि का अनुमान प्रतीत होता है जिसमें लेखन के लिए स्याही का प्रयोग किया गया हो।

गुप्त कालीन ब्राह्मी लिपि की विशेषता →

Scanned with CamScanner

कुषाणों के पतन के बाद उत्तर भारत में गुप्त वंश का उदय हुआ। गुप्त सम्राटों ने भारत के विशाल भू भागों पर राज्य किया। न केवल राजनीतिक अपितु आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से यह सर्वोत्कृष्ट युग था। एतिहासिक गौरवशाली वंश के अनेक अभिलेख भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त हुए। अभिलेखों में संस्कृत का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। गुप्तों का शासन विदेशी प्रभाव से मुक्त रहा, फलतः अभिलेखीय भाषा एवं लिपि पर विदेशी प्रभाव दिखाई नहीं पड़ता है। अभिलेख में ब्राह्मी का प्रयोग किया गया है। इस काल में मौर्य एवं कुषाण काल के अपेक्षा ब्राह्मी अधिक अवस्था में प्राप्त होती है। इस युग में ब्राह्मी लिपि के निम्न विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं

1. मौर्य एवं कुषाण काल की अपेक्षा गुप्त युगीन ब्राह्मी अक्षर रेखाओं एवं कोणों की सहायता से बनाए जाते थे। इन्हें कोणीय अक्षर की संज्ञा प्रदान की जाती थी।
2. गुप्तकाल में अभिलेख के भाषा प्रमुख रूप से संस्कृत थी किन्तु यदा कदा क्षेत्रीय भाषाओं का भी आश्रय प्रदान किया गया।
3. अक्षर प्रायः समान मोटाई के बने होते थे।
4. संयुक्त अक्षरों का प्रयोग अधिक किया जाने लगा इससे उच्चारित शब्दों के अभिव्यक्ति में सुधार आ गया।
5. अभिलेख प्रायः सीधी लाइन में उत्कीर्ण करवाए गए हैं जिनमें सीधी एवं वक्राकार लाइन का भी प्रयोग किया गया। अक्षरों पर शीर्ष रेखा का प्रयोग भी किया जाने लगा।
6. लेखन कला के विभिन्नता के फलस्वरूप अक्षरों की बाईं भुजा लम्बी होने लगी। ऐसा प्रतीत होता है कि इसीलिए मरोड़ कर लिखा जाने लगा था। इसके ठीक विपरीत स्तम्भ और शिलालेखों पर अक्षर को सुडौलता पर ध्यान रखा गया।
7. संस्कृत के बढ़ते प्रभाव के कारण अनुस्वार का प्रभाव बढ़ गया।
8. विसर्ग का प्रयोग पहले की भाँति किया जाता था। परन्तु 'क' और 'प' पर विसर्ग के लिए क्रमशः चिन्ह का प्रयोग किया गया है

Scanned with CamScanner

9. इस युग की लिपि में पूर्ण विराम का प्रयोग किया गया है जो इंगित करता है कि व्याकरण संबंधी नियमों का पालन होता था और वाक्य की धारणा विकसित हो चुकी थी।
10. इस युग में मात्राओं के चिन्ह तो पूर्ववत बने रहे किन्तु उनमें अक्षरों पर प्रयोग में कुछ भिन्नता उत्पन्न हो गई। 'आ' के लिए दाहिने भुजा पर कुछ नीचे की ओर मात्रा लगाने लगी 'उ' के लिए सरल रेखा के स्थान गोलाकार चिन्ह का प्रयोग हुआ जाने लगा है। इसी प्रकार 'ओ' के दो सरल रेखा को आपस में जोड़ा जाने लगा। जैसे — कु के।
11. वर्गों के अक्षरों में भी कुछ परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। क, ग, आकार होने लगा। 'ख' का आकार बनने लगा। 'ज' का आकार केन्द्रीय होकर अंग्रेजी के ε अथवा ह के समान दिखाई देने लगा।
12. 'ट' वर्ग में 'ड' का आकार हो गया। ण प्रायः अथवा आकार के हो गए।
13. 'त' वर्ग के अक्षरों में 'थ' के लिए वृत्त में बिन्दु के स्थान सरल रेखा का प्रयोग किया गया है जैसे थ का आकार अंग्रेजी के की तरह हो गया। जैसे 'न' के लिए खड़ी रेखा के स्थान, प, ढ पर सरल रेखा के स्थान पर गोलाकार रेखा का प्रयोग हुआ था।
14. अशोक एवं कुषाण युग में 'य' के लिए वृत पर अर्द्ध वृत (ك) या हिन्दी के चार (गिनती) के आकार का प्रयोग होता था किन्तु गुप्त युग में म का आकार दो सरल तथा त्रिकोणीय रेखा के आकार पर इस प्रकार का आकार बनाया गया जो सिक्कों में उत्कीर्ण करवाए गए।
15. 'य' वर्ग के अक्षरों का रूप आकार परिवर्तित हो गया। वृत पर खड़ी रेखा के स्थान पर त्रिभुजाकार आकृति पर एक छोटी रेखा बनने लगी।
इस प्रकार हम देखते हैं कि गुप्त कालीन ब्राह्मी लिपि में पूर्व की अपेक्षा

+→

अनेक परिवर्तन हुए। इस युग में इस तथ्य को भी ध्यान में रखकर रखना होगा कि इस कारकों के अभिलेख एवं भी इसी युग में जारी किया गया है। कनिष्क के पकारकों के अभिलेख की सबसे बड़ी विशेषता थी कि अक्षरों के शीर्ष पर वर्गाकार चिह्न बनाया जाने लगे। जैसे, कच आदि। ऐसा विश्वास किया जाता है कि अक्षरों में सुन्दरता लाने के लिए अक्षरों के शीर्ष पर वर्गाकार चिह्न का प्रयोग किया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक युग की भांति गुप्त युग में भी अक्षरों की सुन्दरता एवं आकर्षण के लिए एक ही अक्षर के मूल रूप ध्यान में रखकर कुछ परिवर्तन कर दिए जाते थे। गुप्त युग में धर्म एवं रुचि की व्याख्या के कारण ब्राह्मी अक्षरों में विभिन्नता दिखाई पड़ती है। इससे स्पष्ट है कि गुप्त युग में ब्राह्मी अपनी परिपक्वता की ओर अग्रसर थी।

Scanned with CamScanner